अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

मृदुला गर्ग के उपन्यास चितकोबरा व कठगुलाब में नारी–विमर्श

ऑथर[1]
कु० सान्या (शोधार्थिनी हिन्दी विभाग)
एफ० एस० विश्वविद्यालय,
शिकोहाबाद (उ०प्र०)

ऑथर[2]
डॉ० सुमनलता
(असिस्टेन्ट प्रोफ्रेसर)
एफ०एस० विश्वविद्यालय,
शिकोहाबाद उ०प्र०

हिन्दी लेखिका मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व बहुत ही शर्मीला और अंतर्मुखी माना जाता है। किसी भी लेखक की रचना प्रक्रिया युगीन परिस्थितियों तथा वातावरण से प्रभावित होती है। लेखक जो कुछ वातावरण में घट रहा होता है, उसी को अपने साहित्य में उतारता है तो मृदुला गर्ग ने भी अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्ति की है। मृदुला गर्ग नए युग की लेखिका हैं उन्होंने अपने साहित्य लेखन से समाज को एक नई दिशा दी। उनका लेखन प्रमुख रूप से समाज के रीति–रिवाजों में घिरी स्त्रियों की समस्याओं पर आधारित है। उन्होंने महसूस किया कि हमारे समाज में स्त्रियां भिन्न–भिन्न प्रकार की पीड़ाओं से, संघर्षों से जूझ रही है। मृदुला गर्ग का लेखन साहित्य ऐसी ही स्त्रियों की दास्ता बंया करता हैं। मृदुला जी आज जिस मुकाम पर है उसे पाने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। डॉ० तारा अग्रवाल उनके व्यक्तित्व के बारे में कहती है–''एक लेखिका के रूप में अपने को स्थापित करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। मृदुला गर्ग के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके परिवार की भूमिका तथा परिवेशगत सरकार प्रमुख रहे है।''

मृदुला गर्ग आधुनिक युग की महानतम लेखिकाओं में से हैं। उन्होंने उपन्यास व कहानियों के अलावा निबन्ध, नाटक, संस्मरण भी लिखे। परन्तु उन्होंने मूल रूप से उपन्यास को ही अधिक वरियता दी है। क्योंकि उनका कहना है कि उपन्यास में हम अपनी बात को पूर्ण रूप से स्पष्ट कह सकते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

उपन्यास को मैंने प्राथमिकता दी है क्योंकि जो मैं बनना चाहती थी वह कहानी में सीमित नहीं कर पाती थी। कहानी में मैंने क्षण को पकडा है और उपन्यास में जीवन की विस्तीर्णता को। योम को लेने के पश्चात् मुझे लगता है कि मैं उसकी कहानी में पूरा नहीं कर पा रही हूँ, इसलिए उपन्यास को ही प्राथमिकता देती हूँ।

मृदुला जी हमेशा से ही बच्चों व महिलाओं की सेवा के प्रति सचेत रही हैं। उन्होंने जब महिलाओं पर हो रहे भेदभाव, उन्यास को देखा तो उन्होंने अपने विद्रोह को लेखन के माध्यम से प्रकट किया। वे स्वयं वह बात स्वीकारती हैं– ''किसी भी मूल्य या स्थिति को मैं केवल स्वीकार नहीं कर पाती क्योंकि वह और सर्वमान्य है, होती आयी है और सुरक्षा प्रदान करती है। अपने चारों तरफ घटते अन्याय को देखकर में शांत, स्थिर नहीं रह पाती अनास्था और असंतोष से पनपा रोष उफनने लगता है।

मृदुला गर्ग ने अपनी रचना के विषय में प्रेम, सेक्स, असित्तत्व, वाण को चुना है। उनका मानना है कि प्रेम से बढकर कुछ नहीं है और इसी प्रेम के माध्यम से उन्होंने अपने साहित्य मं स्त्री अस्मिता की तलाश करने की कोशिश की है।

''प्रेम और काम इन दो शास्वत सत्यों के आस–पास ही उनका वैचारिक चिंतन प्रस्फुटित पस्सिवत हुआ। प्रेमहीन सेक्स और सेक्सहीन प्रेम दोनों ही मनुष्य जीवन का अधिकार है, क्योंकि दोनों और ही प्राकृतिक संवेगों का निराधार हो जाता है। परन्तु मृदुला गर्ग का लेखन स्त्री पुरूष के सम्बन्धों की धुंधासी अब से पृथक हटकर क अस्मिता की अर्थपूर्ण तलाश है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास कुछ अलग और नया ही लेकर आते हैं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास ''चितकोबरा'' विवाहित स्त्री के द्ववंद भावनात्मक टकराहट को और उसके निर्माण न लेने की स्थिति को दर्शाता है। मनीषा और मन दोनों स्थितियों पर लेखिका कहती है।

''मानसिक अंतद्वद्व या असमंजस की स्थिति से छुटकराा पाया हुआ पात्र मेरे लिए दिलचस्पी का विषय नहीं रहता। वैसे भी हमारा समाज जिस तरह की संक्रमण की स्थिति में है उसमें इस तरह की मानसिक दुविधा से मुक्ति पात्र वॉटोपियन ही हो सकते हैं। मेरे लिए यूँ भी दिलचस्पी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

का विषय यात्रा है पडाव नहीं। यात्रा किए बगैर ही 'तीसरा क्षितिज' मिल गया तो लिखने को क्या बचा ?''

'चितकोबरा' उपन्यास मृदुला जी का बहुत ही प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें शादीशुदा औरत की कथा कही गई। इस उपन्यास में खुले शब्दोंमें औरत की सेक्स से सम्बन्धी इच्छाएँ बताई गई। लेकिन समाज ने इसका विरोध किया। इस उपन्यास को जनता ने अश्लील कहा। यहाँ तक कि उन पर मुकद्दमा भी चलाया गया, पर इन सब बातों का उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पडा। उनका लक्ष्य या स्त्री को स्वयं अना अस्तित्व खोजन के काबिल बने। लोगों ने सोचा शायद अब वो अश्लीलता पर नहीं लिखेंगी। परन्तु मृदुला जी ने अपना काम जारी रखा। वे अपने लेखन के जरिये समाज की यथार्थ तस्वीर दुनिया को दिखाना चाहती थी। इस प्रकार उनके उपन्यास 'कठगुलाब' में भी उन्होंने वर्तमान स्त्री के संघर्ष और उनकी इच्छाओं को अभिव्यक्ति दी है। यह उपन्यास पुरूष के द्वारा किए जा रहे शोषण, दमन, बलात्मकार का बोल–बाला चित्रण है।

मृदुला गर्ग ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में स्त्री को ही महत्व दिया है। क्योंकि वर्तमान में भी नारी अपने इच्छा से कार्य नहीं कर सकती। उसे पुरूष से अब भी कम आँका जाता है। अब भी स्त्री अपना जीवन साथी नहीं चुन सकती। इसलिए मृदुला गर्ग जी चाहती है कि उनकी स्त्री चाहे नौकरी पेशा हो या घरेलू, अशिक्षित हो या अनपढ़ पर हो वो स्वावलंबी। उसे अपने अस्तित्व के प्रति सेचत रहना होगा।

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में प्रेम सम्बन्धी विचार भी प्रकट किए हैं। प्राचीन समय में प्रेम पर केवल पुरूष का वर्चस्व था परन्तु समय परिवर्तन ने स्त्रियों को भी यह अधिकार दिया। मृदुला जी का अपना मत प्रेम की प्रति इस प्रकार है– ''जीवन को उसके समक्ष और उदास रूप में जानने–पहचानने के लिए प्रेम से अधिक उपर्युक्त माध्यम नहीं मिल सकता। जो लोग प्रेम के कथ्य को मात्र स्त्री–पुरूष सम्बन्ध तक सीमित कर लेते हैं, वे साहित्य के प्रति और जीवन के प्रति भी अन्याय करते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

मृदुला गर्ग का मानना है कि हमारा समाज विषमता पर आधारित है। इनका मानना है कि भारतीय संस्कृति व्यक्तिवादी है। यह विषमता और व्यक्तिवादिता ही पूँजीवाद व्यवस्था को जन्म देती है जाति व वर्ग विभाजित हमारे समाज में कवेल समूहों के बीच भाषण और पूँजीभूत विषमता नहीं है, स्त्री और पुरूष के बीच भी गहरी असमानता है। बल्कि, अन्याय की एक समुचित, सुनियोजित व्यवस्था है।

भारतीय संस्कृति में मनुष्य शरीर को नश्वर कहा गया है ताकि मनुष्य अपने को केवल शरीर में सीमित न रखकर अपना व्यक्तित्व पहचाने। परन्तु चिंता का विषयय यह है कि नारी का सदा से ही 'देह' माना गया है। उसे केवल देह को रूप में ही मान्यता मिली व्यक्तिगत पहचान नहीं। प्राचीन काल से ही स्त्री का देह के रूप में शोषण होता आ रहा है। अब स्त्री इस देह के दायरे से निकलकर अपनी पहचान चाहती है। जो स्त्री नैतिकता, समजा की मान्यताएँ, सेक्स का पालन करती है वही गुणगाान मानी जाती है लेकिन जो इनका पालन नहीं करती वह चरित्रहीन, कुल्टा कही गई। मृदुला जी ने ऐसी नैतिकता के प्रतिमानों का विरोध करके स्त्री को पहचान देने का प्रयत्न किया। इस विषय में मृदुला गर्ग का मत है कि–

''बहुत बार होता यह है कि स्वतंत्रता के बहाने या आधुनिकता के बहाने एक नई प्रकार की पराधीनता स्त्री पर थोप दी जाती है और आज के सेवन में देह की स्वतंत्रता पर जो अतिशय आग्रह है वो मुझे लगता है, ऐसी ही पराधीनता का कारण बन सकता है।''

मृदुला गर्ग जी एक श्रेष्ठ लेखिका हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्रियों को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी बनने की प्रेरणा दी है। उनका मानना है कि स्त्री को कदाचित यह नहीं सोचना चाहिए कि वह स्त्री है जो लाचार व कमजोर है।

कठगुलाब में मरियान का कथन, ''अपने को कमतर मानने वाली औरतें मर्द होना चाहती हैं।''

मृदुला जी ने स्त्रियों को बलात्कार होने पर स्त्री को अपराध बोध से मुक्त रहने की प्रेरणा दी है। उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते रहना चाहिए। वर्तमान समय में बलात्कार जैसी समस्या दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है। इस घटना से आहत होकर स्त्री आत्महत्या जैसा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

घिनौना कार्य करने के लिये तत्पर हो जाती है। परन्तु मृदुला गर्ग अपने उपन्यास ''कठगुलाब'' की पात्र स्मिता जो बलात्कार की शिकार हुई, उसके माध्यम से अपने भाव बतलाती है। ''सूरजमुखी अंधेर के'' या इंसान को नराज की नायिका की तरह, मैं खुद को दूषित पानी क्यों नहीं मानती ? खुदकुशी करने का मेरा जमीन मुझे नहीं उकसाता ? मेरा मन मुझे धिक्कारता था तो सिर्फ इसलिए कि मैंने प्रतिशोध नहीं लिया। भगौडों की तरह पलायन क्योंकिया ? पर क्या एक बेहतर जिन्दगी जीने का ख्याल देखना बुजदिली है।

मृदुला जी का लेखन स्त्रियों को पहचान दिलाने के लिये समर्पित है। हालाँकि कुछ लोगों ने अश्लील कहकर इनके लेखन को नकारा, परन्तु इस महान लेखिका ने इन बातों की पर्वाह नहीं की। वे जीवन से संघर्ष करती हुई बेपरवाह होकर स्त्रियों के हित में लिखती है और लिखती रहेंगी।

संदर्भ सूचीः–

1. डॉ० तारा अग्रवाल, मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, पृष्ठ 13
2. उपरोक्त, पृष्ठ 30
3. कृष्णा तँवर, स्त्री विमर्श वैचारिक संस्कार और मृदुला गर्ग के उपन्यास, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 76
4. विनेश द्विवेदी, पुनश्च, अंक 15, पृष्ठ 3
5. सारिका, अक्टूबर (16 से 31) साक्षात्कार दिनेश द्विवेदी से लेखिका की अंतरग बातचीत, पृष्ठ 47
6. मृदुला गर्ग, चितकोबरा, भूमिका, पृष्ठ 6
7. मृदुला गर्ग, चुकते नहीं सवाल, ''सत्ता और स्त्री लेख, पृष्ठ 69–70
8. मृदुला गर्ग, देह कभी आजाद हो ही नहीं सकती, लेख, पुनश्च, जून 2004, पृष्ठ 236
9. कृष्ण तँवर, स्त्री विमर्श, वैचारिक सरोकार और मृदुला गर्ग के उपन्यास, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 31
10. मृदुला गर्ग, कठगुलाब पृष्ठ 32